

अब क्या करूँगा, जी के यहाँ  
 तेरे जहान, में  
 करती, फसी है - मेरी मर्क  
 आँधी तूफान में  
 इन काली, घटाओं से चमक  
 बिजली की आर्इ  
 दिखते, न थे किनारे.  
 मेरी जान पे आर्इ  
 तारे नजर आते - नहीं इस आसमान में

करती फसी - - - अब क्या - - -

करती फसी - - -

दरिया, के बीच, जिंदगी  
 घनघोर - अंधेरा  
 अफसोस, बस इतना कि अभी  
 दूर सबेरा  
 वो तीर, चला जाती जो तेरी कमान में -

करती फसी - - - अब क्या - - -

करती फसी - - -

कुछ देर sssss और जीने की ssss

दिल में ssss तलब हुई sssss

लगने लगा "श्रीबाबा श्री" नहीं ss

मर्क ssss अलग हुई sss

जीवन sssss गुजारा, अब तक sss मर्क

तेरी ssssss शान में ssss

कर-ली फरी-----अब क्या-----

कर-ली फरी-----